उत्तर—नवम्बर, 1931 के पहले तक लोगों की यह गलत धारणा थी कि हिन्दी का पहला पत्र 'बनारस अखबार' है जिसका प्रकाशन राजा शिवप्रसाद की सहायता से सन् 1845 ई. में बनारस से हुआ था। बंगला के प्राचीन पत्रों के अन्वेषी और उद्धारक ब्रजेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय को हिन्दी के भी कुछ प्राचीन पत्र मिल गये जिनसे हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। नवम्बर, 1931 के 'विशाल भारत' में हिन्दी समाचार-पत्रों की प्रारम्भिक कथा लिखकर श्री बन्दोपाध्याय ने इतिहासकारों की पुरानी धारणा को निराश किया और 'उदन्तमार्तण्ड' की सूचना देकर हिन्दी का अशेष उपकार किया। हिन्दी के आरम्भिक समाचार पत्रों के बारे में और भी कई सूचनाएँ उन्होंने दीं और 'विशाल भारत' मार्च, 1931 में 'हिन्दी का प्रथम समाचार- पत्र' शीर्षक लेख लिखकर 'उदन्तमार्तण्ड' की विस्तृत चर्चा की, उसके अनेक महत्वपूर्ण स्थल उद्धृत किये और उसके उदय-अस्त की पूरी कहानी लिखी। अब तक का अनुसंधान और इतिहासकार इसे ही हिन्दी का प्रथम पत्र मानते हैं।

उदन्तमार्तण्ड—4 अप्रैल, 1823 को ब्रिटिश सरकार ने समाचार-पत्र तथा मुद्रण सम्बन्धी नये कानून क्रियान्वित किए थे जो वेलेजली की पुरानी व्यवस्था से भी कठोर थे। इसके अनुसार समाचार-पत्र प्रकाशित करने के पूर्व संचालक को भारत सरकार से पत्र-प्रकाशन का लाइसेन्स लेना पड़ता था। कलकत्ते में कोलूटोला नामक मुहल्ले के 37 नम्बर आमडातल्ला गली से श्री युगलकिशोर शुक्ल ने सन् 1826 ई. में 'उदन्तमार्तण्ड' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक पत्र निकालने का आयोजन किया और इसके लिए भारत सरकार से लाइसेन्स प्राप्त करने की दरख्वास्त दी। 16 फरवरी, 1826 ई. को सरकार ने उनकी दरख्वास्त मंजूर करके उन्हें अखबार निकालने का लाइसेन्स दिया।

'उदन्तमार्तण्ड' का पहला अंक 30 मई, 1826 ई. को प्रकाशित हुआ था। फुलस्केप साइज के इस पत्र के मुख पृष्ठ पर 'उदन्तमार्तण्ड' शीर्षक के नीचे संस्कृत की एक लम्बी पंक्ति इस प्रकार मुद्रित रहती थी—

उदन्तमार्तण्ड
अर्थात्
दिवाकान्त कान्ति विनाध्वातयन्त
न चाप्नोति तद्वज्जगत्यत्र लोकः।
समाचार तेवामृते त्वप्तमाप्त
न शक्नोति तस्मात्करोमीति यत्नं॥

आरम्भ में ही प्रकाशकीय विज्ञप्ति 'इस कागज के प्रकाशक का इश्तिहार' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुई है, जिसे प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट में अविकल उद्धृत किया गया है।

स्पष्ट है कि (एक महत् इच्छा और ऊँचे आदर्श को लेकर हिन्दी के इस प्रथम पत्र का प्रकाशन हुआ था। प्रति मंगलवार को प्रकाशित होने वाला यह पत्र सरकारी सहायता के अभाव तथा पर्याप्त ग्राहकों की कमी के कारण अधिक दिनों तक प्रतिकूलता से न लड़कर 4 दिसम्बर, 1827 को हमेशा के लिए अस्त हो गया।) 4 दिसम्बर को अन्तिम अंक में सम्पादक ने लिखा था—

आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त,
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।)

कहना न होगा कि पं. युगलकिशोर शुक्ल ने ये पंक्तियाँ बड़ी व्यथा के साथ लिखी होंगी। यह भी कुछ विचित्र संयोग है कि हिन्दी पत्रकारिता के उदय के साथ ही आर्थिक संकट का अशुभ ग्रह उसके साथ लग गया जिसकी कुदृष्टि हिन्दी पत्रकारिता पर सदैव लगी रही।

(बंगदूत—उदन्तमार्तण्ड के बाद कलकत्ता से ही द्वितीय उल्लेखनीय पत्र राजा राममोहन राय द्वारा सम्पादित हिन्दू हेराल्ड था जो बंगला, फारसी, अंग्रेजी व हिन्दी में निकला और बंगदूत के नाम से जाना जाता है। यह पत्र 10 मई, 1829 को प्रकाशित हुआ। यह पत्र साप्ताहिक था। इसके प्रथम सम्पादक नीलरतन हालदार थे। यह प्रति रविवार को प्रकाशित होता था और मासिक मूल्य एक रुपया था। इस पत्र का हिन्दी अंश उपलब्ध नहीं है इसलिए इसकी विस्तृत चर्चा सम्भव नहीं है।) अपनी पुस्तक में पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने इसका उल्लेख किया है। बंगदूत के हिन्दी अंश के ऊपर यह छन्द रहता था—

दूतन की यह रीति बहुत थोरे में भाषैं।
लोगनि को बहुलाभ होय याही ते लाखैं।
बंगला को दूत दूत यह वायु को जानौ।
होय विदित सब देश क्लेश को लेश न मानौ।

बंगदूत की हिन्दी का एक नमूना इस प्रकार है—"जो सब ब्राह्मण सांगदेव अध्ययन नहीं करते सो सब व्रात्य हैं। यह प्रमाण करने की इच्छा करके ब्राह्मण धर्मपरायण श्री सुब्रह्मण्यम शास्त्री ने जो (प्रश्न?) सांगवेदाध्ययन हीन अनेक इस देश के ब्राह्मणों के

समीप उठाया (पठाया?) है, उसमें देखा जो उन्होंने लिखा है—वेदाध्ययन हीन मनुष्यों के स्वर्ग और मोक्ष होने शक्ता नहीं।"

(बनारस अखबार—उत्तर प्रदेश से श्री गोविन्द नारायण थत्ते के सम्पादन में जनवरी, 1845 में 'बनारस अखबार' निकला। इसके संचालक मनीषी राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द थे। बहुत से लोग इसे हिन्दी का प्रथम अखबार मानते हैं, परन्तु यह हिन्दीभाषी प्रदेश का प्रथम समाचार-पत्र अवश्य था न कि हिन्दी का पहला अखबार। इसमें देवनागरी लिपि का प्रयोग होता था। इसमें अरबी-फारसी शब्दों की भरमार थी जिसको समझना साधारण जनता के लिए कठिन था। इस पत्र में संस्कृत की पुस्तकों के कुछ अनुवाद, स्थानीय समाचार तथा कुछ अन्य पत्रों में प्रकाशित सामग्री के उद्धरण रहते थे। इसमें हिन्दी की अपेक्षा उर्दू अधिक होती थी। बनारस अखबार के बाद कलकत्ते से 11 जून, 1846 को इण्डियन सन् (मार्तण्ड), इन्दौर से 6 मार्च, 1848 को 'मालवा अखबार' प्रकाशित हुआ। यह पत्र मध्य भारत ही नहीं वरन् वर्तमान मध्य प्रदेश के पश्चिमी हिन्दी क्षेत्र से निकलने वाला प्रथम पत्र था।)

साम्यदण्ड मार्तण्ड—हिन्दी के आदि पत्रकार डॉ. युगलकिशोर शुक्ल ने सन् 1850 में 'साम्यदण्ड मार्तण्ड' प्रकाशित किया था। 23 वर्षों के बाद शुक्लजी ने पुनः यह महत् उपक्रम किया था।

(**सुधाकर**—सन् 1850 में श्री तारामोहन मैत्रेय नामक बंगाली ने बनारस से 'सुधाकर' पत्र निकाला। यह पत्र साप्ताहिक तथा बंगला व हिन्दी दोनों में प्रकाशित होता था। भाषा की दृष्टि से 'सुधाकर' को हिन्दी प्रदेश का पहला पत्र कहना चाहिए। सन् 1853 में यह पत्र केवल हिन्दी में ही प्रकाशित होने लगा। यह नागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा में प्रकाशित होता था और लिथो पर सुधाकर प्रेस से छपता था। इसके मुद्रक पण्डित रत्नेश्वर तिवारी थे। इस पत्र में ज्ञान तथा मनोरंजन की पर्याप्त सामग्री होती थी।)

(**बुद्धिप्रकाश**—मुंशी सदासुखलाल के सम्पादन में सन् 1852 में आगरा से 'बुद्धिप्रकाश' निकला। यह पत्र नुरुल बसर प्रेस से प्रकाशित होता था। यह पत्र पत्रकारिता की दृष्टि से ही नहीं वरन् भाषा एवं शैली के विकास के विचार से विशेष महत्व रखता है। इसमें विविध विषयों यथा—इतिहास, भूगोल, शिक्षा, गणित आदि पर सुन्दर लेख प्रकाशित होते थे।) इसकी भाषा की प्रशंसा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने की है।

(**मजहरुल सरूर**—भरतपुर के राजा ने शासन की ओर से सन् 1852 में एक मासिक पत्र निकाला। यह पत्र उर्दू व हिन्दी का था अर्थात् यह द्विभाषी पत्र था। इसकी जबान उर्दू थी तो लिपि देवनागरी थी। यह दो कॉलम का पत्र था तथा दोनों हो भाषाएँ एक-एक कॉलम में होती थीं। इसे राजस्थान का प्रथम पत्र होने का गौरव प्राप्त है। इसी के दौरान ग्वालियर से 'ग्वालियर गजट', आगरा से 'प्रजाहितैषी' आदि पत्र प्रकाशित हुए।)

समाचार सुधावर्षण—'उदन्तमार्तण्ड' हिन्दी का पहला साप्ताहिक पत्र था। इसके विपरीत समाचार सुधा-वर्षण हिन्दी का प्रथम दैनिक पत्र था। जून, 1854 में कलकत्ता से प्रकाशित इस पत्र का सम्पादन श्यामसुन्दर सेन करते थे, जो बंगाली थे। इसमें सम्पादकीय टिप्पणियाँ, लेख और महत्वपूर्ण समाचार हिन्दी में लिखे जाते थे तथा पहले रखे जाते थे। बाद में बंगला भाषा में व्यापार समाचार, विज्ञापन दर आदि प्रकाशित किये जाते थे। अपनी निर्भीकता तथा प्रगतिशीलता के कारण इसे ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा।

पयामे आजादी—सन् 1857 में आन्दोलनों के कारण पत्रों की शैली में अन्तर आ गया था। यही कारण था कि भारतीय अखबार सरकार के विरुद्ध बोलने लगे थे। तत्कालीन स्वतन्त्रता संग्राम के प्रसिद्ध नेता अजीमुल्ला खाँ ने 8 फरवरी, 1857 को दिल्ली से 'पयामे आजादी' नामक एक राष्ट्रीय अखबार निकाला। अजीमुल्ला खाँ नाना साहब पेशवा के परामर्शदाताओं में से थे। यह पत्र पहले उर्दू में निकला था पर कुछ समय बाद हिन्दी में निकलने लगा। यह पत्र एक ऐसा शोला था जो अपनी प्रखर एवं तेजस्वी वाणी से जनता में स्वतन्त्रता का प्रदीप्त स्वर फूँककर नया जोश पैदा करता था। इस पत्र ने वातावरण में ऐसा जोश पैदा किया जिससे ब्रिटिश सरकार घबरा उठी। जिस व्यक्ति के पास भी पयामे आजादी की कोई प्रति मिल जाती थी उसे अनेक यातनायें दी जाती थीं। यह पत्र विदेशी शासन का कोपभाजन होकर शीघ्र ही बन्द हो गया। इसी पत्र में भारत का तत्कालीन राष्ट्रीय गीत छपा था।

धर्मप्रकाश—धर्मप्रकाश नाम का मासिक पत्र सन् 1859 में मनसुख के सम्पादकत्व में अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ था। यह विशेषत: धर्म, सम्प्रदाय तथा जाति से सम्बन्धित था। ऐसा अनुमान है कि यह हिन्दी का पत्र था जो सन् 1867 में आगरे से हिन्दी और संस्कृत में प्रकाशित हुआ। इसे सनातन धर्म सभा निकालती थी। सन् 1890 में यही पत्र रुड़की से उर्दू और संस्कृत में प्रकाशित हुआ। उस समय इसके सम्पादक ज्वाला प्रसाद थे।

सूरज प्रकाश—सन् 1861 में आगरा से गणेशीलाल के सम्पादकत्व में 'सूरज प्रकाश' नामक पत्र का उदय हुआ। इसका उर्दू भाग 'आफताबे आलमताब' हुआ करता था।

सर्वोपकारक—आगरे से शिवनारायण 'मुफीद-उल-खलाइक' पत्र उर्दू में निकालते थे। बाद में इसके दो भाग कर दिए गए। उर्दू का 'मुफीद-उल-खलाइक' ही रहा और हिन्दी का नाम 'सर्वोपकारक' रखा गया। सन् 1865 में यह पत्र स्वतंत्र हो गया।

लोकमत—यह पत्र आगरा शहर के पास सिकन्दरा से 1 जनवरी, 1863 में प्रकाशित किया गया। यह मासिक पत्र था। इसमें अधिकतर बाइबिल का हिन्दी अनुवाद होता था।

प्रजाहित—प्रजाहित के सम्पादक हाकिम जवाहरलाल थे। यह इटावा से प्रकाशित हुआ। यह एक पाक्षिक पत्र था।

ज्ञान प्रकाश—ज्ञान प्रकाश सन् 1861 में आगरा से प्रकाशित हुआ। यह एक परम्परावादी धार्मिक पत्र था।

भारत खण्ड मित्र—यह भी एक परम्परावादी पत्र था जो सन् 1866 में आगरे से प्रकाशित हुआ। इसे पं. वंशीधर, जो एक अध्यापक थे, निकालते थे।

इसी प्रकार जगलाभ चिन्तक, ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका, वृतान्त विलास, रत्नप्रकाश आदि पत्र प्रकाशित हुए।

हिन्दी पत्रकारिता का विकास

सन् 1857 का परवर्ती भारतीय मानस अवसादग्रस्त हो गया था। सरकारी दमन-चक्र उग्र हो चला था, जिसका एकांत लक्ष्य था—राष्ट्रीयता की उग्र चेतना को समूल उखाड़ फेंकना। इस प्रकार भारतीय पत्रकार के सामने दो कठोर मोर्चे थे। एक ओर देशवासियों की मानसिक खिन्नता थी, दूसरी ओर सरकारी दमन-नीति। इसी संक्राति काल में हिन्दी पत्रकारिता के दूसरे चरण का निर्माण हुआ। संक्रान्ति की चुनौती ने ऐसे भारतीय पत्रकारों को झकझोर कर जगा दिया था। इस जागृति ने भारतीय मानस-मनीषा को जगाने में बड़ी भूमिका अदा की। जातीय चरित्र को पराधीनता से उबारने की एक महान प्रेरणा आविर्भूत हुई। भारतीय पत्रकारिता के महान् पुस्तकर्त्ताओं ने अपनी साधना द्वारा उस प्रेरणा को तीव्र किया। पराधीनताजनित अज्ञान से धूमायित जातीय मानस में नये आलोक की रचना की, दिशाहारा गणदेवता को सही मार्ग-संकेत दिया, साम्राज्यवादी दानव को पराजित करने की शक्ति दी तथा लड़ने की कला सिखायी। देश की इसी मनोद्वेलित मनःस्थिति में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं—

कविवचन सुधा—15 अगस्त, 1867 में काशी के बाबू हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' नामक मासिक पत्र निकाला, शीघ्र ही यह मासिक पत्र सन् 1875 में साप्ताहिक हो गया। प्रारम्भ में इसमें कविताओं का प्रकाशन होता था। इसी पत्रिका में देव का 'अष्टयाम', दीनदयाल गिरि का 'अनुराग वासु', चन्द्र का 'रासौ', जायसी का 'पद्मावत', कबीर की 'साखी', गिरधरदास का 'नहुष' नाटक आदि का प्रकाशन हुआ। साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में दखल करने वाली यह पत्रिका स्वभाषा तथा जातीय अभिमान के कारण सरकारी कोप का भाजन बनी। इसमें प्रकाशित राजनीतिक तथा सामाजिक लेखों ने एक विशिष्ट व व्यापक पाठक वर्ग तैयार किया। हिन्दी पत्रकारिता के नये युग का आरम्भ ही 'कविवचन सुधा' से माना जाता है।

हरिश्चन्द्र मैगजीन—15 अक्टूबर, 1873 को काशी से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' को जन्म दिया। यह पत्रिका मासिव थी। इसमें पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ एवं व्यंग्य आदि प्रकाशित होते थे। जब इसमें देशभक्तिपूर्ण लेख निकलने लगे तो इसे बन्द कर दिया गया।

बालबोधिनी पत्रिका—9 जनवरी, 1874 को भारतेन्दु ने 'बालबोधिनी पत्रिका' निकाली। यह पत्रिका महिलाओं की मासिक पत्रिका थी। इसके प्रथम अंक में प्रथम पृष्ठ पर जो विवेचन प्रकाशित हुआ था, वह नारी जागरण की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है

ही, साथ ही भाषा-शैली और अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है।

हिन्दी प्रदीप—1 सितम्बर, 1877 को प्रयाग से बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' नाम का मासिक पत्र निकाला। यह पत्र घोर संकट के बावजूद भी 35 वर्षों तक निकला। भारतेन्दु जी ने इस पत्र का उद्घाटन किया। पत्रकारिता की दृष्टि से हिन्दी प्रदीप का जन्म हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्रान्तिकारी घटना है। इसने हिन्दी पत्रकारिता को नयी दिशा प्रदान की। इसका स्वर राष्ट्रीय निर्भीकता तथा तेजस्विता का था, अतः सरकार इस पर कड़ी नजर रखती थी। इसमें हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता की प्रभूत सामग्री रहती थी। इस मासिक पत्रिका में विविध विषयों से सम्बन्धित सामग्री नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति सम्बन्धी खबरें भरी रहती थीं। भट्टजी हिन्दी प्रदीप हेतु रचनायें मंगाने के लिए पद्य का भी प्रयोग करते थे। 'जरा सोचो तो लोग बम क्या है' पं. माधव शुक्ल की इस कविता के प्रकाशन पर पत्र का अवसान हो गया।

भारत मित्र—17 मई, 1878 को कलकत्ता से यह पत्र प्रकाशित हुआ। जिस समय यह पत्र प्रकाशित हुआ उस समय वहाँ से हिन्दी का कोई पत्र नहीं निकलता था। भारत मित्र के सबसे पहले वैतनिक सम्पादक पं. हरमुकुन्द शास्त्री लाहौर से बुलाये गये थे। इस पत्र की आयु काफी रही। यह पत्र 57 वर्षों तक चला। यह पत्र पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र, पं. हरमुकुन्द शास्त्री, पं. रुद्रदत्त शर्मा, पं. अमृतलाल चक्रवर्ती, बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं. बाबूराव विष्णु पराड़कर, पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी एवं लक्ष्मण नारायण गर्दे जैसे शीर्षस्थ मनीषी पत्रकारों द्वारा सम्पादित होता रहा। यह पत्र राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक व सामाजिक आन्दोलनों का खुला ब्यौरा छापता था। हिन्दी का यह पहला पत्र था जो हजारों की संख्या में छपता था। सन् 1935 में यह बन्द हो गया।

सार सुधानिधि—13 अप्रैल, 1879 को प्रकाशित 'सार सुधानिधि' पं. सदानंद जी के सम्पादन में निकला। इसके संयुक्त सम्पादक पं. दुर्गाप्रसाद, सहायक सम्पादक गोविन्द नारायण और व्यवस्थापक पं. शम्भूनाथ थे। इसकी भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी, अतः कुछ कठिन होती थी। लेख अच्छे व गम्भीर होते थे। यह पत्र राजनीति का ही नहीं, अन्य विषयों का भी आलोचक था। यह उस समय का बड़ा ही तेजस्वी पत्र था जो अपनी उग्रवाणी के कारण सरकार की कोपदृष्टि का शिकार हुआ। फलतः यह सन् 1890 में बन्द हो गया।

सज्जन कीर्ति सुधाकर—यह पत्र देशी राज्यों से निकलने वाला पहला 'हिन्दी पत्र' था, क्योंकि राज्यों के सभी पत्र उर्दू व हिन्दी में निकलते थे जिनमें उर्दू का ही प्रथम स्थान होता था। मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह के नाम पर यह पत्र निकला था। यह पत्र सन् 1879 में आगरा के पं. वंशीधर वाजपेयी के सम्पादन में प्रकाशित हुआ।

उचितवक्ता—यह हिन्दी पत्रकारिता के महान उन्नायक पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र का अपना पत्र था जो 7 अगस्त, 1880 को प्रकाशित हुआ था। चूँकि पत्र पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र

का अपना पत्र था, इसलिए वे स्वेच्छा और पूरी स्वतन्त्रता से इसे प्रकाशित करते थे। स्वाधीनता खोकर उन्नति करने में गौरव नहीं है, यह 'उचितवक्ता' के पहले अंक की सम्पादकीय टिप्पणी का मूल स्वर था। यह 15 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। इसने इल्बर्ट बिल, प्रेस कानून, वर्नाक्यूलर एक्ट का बड़ी निर्भीकता से विरोध किया।

आनंदकादम्बिनी—पं. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा सम्पादित 'आनन्द कादम्बिनी' मासिक पत्रिका का प्रकाशनारम्भ श्रावण वि. सं. 1938 (सन् 1881) को हुआ। इसका प्रथमांक बनारस लाइट यन्त्रालय में गोपनीय पाठक द्वारा मुद्रित हुआ और मिर्जापुर से श्री वेणीप्रसाद शर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ। पत्रिका के प्रकाशन में प्रेमघन जी को प्रारम्भ में बड़ी कठिनाई हुई थी। उनके पास अपना प्रेस नहीं था। परिणामस्वरूप 'आनन्दकादम्बिनी' के मुद्रण के लिए अनेक प्रेसों की शरण लेनी पड़ी।

यह पत्रिका प्रेमघन जी की कविताओं और लेखों से भरी रहती थी। दूसरों के लेख इसमें न के बराबर होते थे। इस पर भारतेन्दुजी ने एक बार उनसे कहा था—"जनाब ! यह किताब नहीं कि जो आप अकेले ही हर काम फरमाया करते हैं, बल्कि अखबार है जिसमें अनेक जनलिखित लेख होने आवश्यक हैं और यह भी जरूरत नहीं कि सब एक तरह के लिखाड़ हों।" आनन्दकादम्बिनी अपने समय की बहुचर्चित पत्रिका थी। उस काल के अनेक पत्रों ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की थी।

ब्राह्मण—पं. प्रतापनारायण मिश्र ने 1883 ई. में कानपुर से मासिक 'ब्राह्मण' का सम्पादन व प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इसका पहला अंक होली के दिन 15 मार्च, 1883 को कानपुर के 'नामी यंत्रालय' से मुद्रित हो ईश्वरालम्बित मिश्र द्वारा प्रकाशित हुआ था। प्रथम खण्ड की प्रथम संख्या की इन पंक्तियों से उसके प्रकाशन दिन की सूचना मिलती है—"जन्म हमारा फागुन में हुआ और हो की पैदाइस प्रसिद्ध है। कभी कोई हंसी कर बैठे, क्षमा कीजिएगा।"

ब्राह्मण में मुख्य रूप से मिश्र जी की रचनायें छपती थीं। उस समय लेखकों का बड़ा अभाव था। जो लेखक थे भी वे स्वयं किसी-न-किसी पत्र के सम्पादक थे। फिर भी ब्राह्मण की लोकप्रियता ने अनेक लेखकों के लेखों को आमन्त्रित कर उन्हें प्रकाशित किया था। यह उस समय का सबसे तेजस्वी पत्र था। इसकी आयु कुल 12 वर्ष तीन महीने ही रही। फरवरी, 1897 ई. में यह बन्द हो गया।

भारत जीवन—बाबू रामकृष्ण वर्मा ने काशी से 3 मार्च, 1884 को 'भारत जीवन' पत्र प्रकाशित किया। यह पहले 4 पृष्ठ का था बाद में 8 पृष्ठों का हो गया, फिर 6 पृष्ठों में छपने लगा। इसका वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया था। यह पत्र 30 वर्षों तक प्रकाशित हुआ। 'भारतीय जीवन' सदा एक दब्बू अखबार रहा। साहस से इसने कभी भी नहीं लिखा।

हिन्दोस्थान—सन् 1885 में राजा रामपालसिंह लंदन से इसे कालाकांकर ले आये और यहाँ इसके हिन्दी-अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित होने लगे। यह उत्तर प्रदेश से पं. महामना मदनमोहन मालवीय के सम्पादन में निकला। यह हिन्दी क्षेत्र से प्रकाशित होने

वाला प्रथम सम्पूर्ण हिन्दी दैनिक पत्र था। इसके सहयोगी नवलजी प्रसिद्ध थे। हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि का समर्थन इस पत्र द्वारा निरन्तर होता रहा। इसमें सरकारी अफसरों की कटु आलोचना होती थी। राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार-प्रसार तथा सुधार का प्रयास इस पत्र की नीति का आधार था।

शुभचिन्तक—सन् 1887 में जबलपुर से पं. रामगुलाम अवस्थी के सम्पादन में 'शुभचिंतक' पत्र निकला। यह पत्र साप्ताहिक था। बाद में इसके सम्पादक हितकारिणी स्कूल के हैडमास्टर रायसाहब रघुवरप्रसाद द्विवेदी हो गये।

हिन्दी बंगवासी—हिन्दी बंगवासी सन् 1890 में कलकत्ता से पं. अमृतलाल चक्रवर्ती के सम्पादन में निकला। यह एकदम नये ढंग का अखबार था—इस पत्र का अपना ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि सभी श्रेष्ठ पत्रकारों ने इसका सम्पादन कार्य किया था—बालमुकुन्द गुप्त, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, लक्ष्मणनारायण गर्दे आदि। यह पत्र दीर्घजीवी रहा। यह पत्र हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकारों का प्राथमिक विद्यालय सिद्ध हुआ।

(**नागरी नीरद**—सन् 1892 में 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक प्रेमघन जी ने 'नागरी-नीरद' नाम का एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के अनुसार इसका प्रकाशन सन् 1893 में हुआ, किन्तु इसका प्रथमांक सितम्बर, 1992 ई. को प्रकाशित हुआ था।) प्रेमघन जी घन या बादल के बड़े प्रेमी थे, इसलिए अपना उपनाम भी प्रेमघन रखा। इतना ही नहीं उन्होंने 'नागरी नीरद' के अंकों और संख्याओं के स्थान पर वर्षा और बिन्दु जैसे शब्दों का प्रयोग किया। (बाद में यह मासिक पत्र हो गया था। इसके अन्तर्गत विज्ञापन और सूचनाएँ छपती थीं। प्रेस की छपाई के सम्बन्ध में भी विज्ञापन होते थे। इसके लेखक प्रेमघन जी के भाई, भतीजे और कुछ मित्र हुआ करते थे। इसमें छपने वाले राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक आदि विषय अधिक चर्चित होते थे।)

साहित्य सुधानिधि—1 जनवरी, 1893 को बाबू देवकीनंदन खत्री ने 'साहित्य सुधानिधि' का प्रकाशन किया। इसके सम्पादक मण्डल में बड़े-बड़े साहित्यकार बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, बाबू राधाराम कृष्णदास, बाबू कीर्तिप्रसाद थे।

(**नागरी प्रचारिणी पत्रिका**—यह पत्रिका सन् 1896 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने त्रैमासिक प्रकाशित की थी। इसके सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास, महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी, कालीदास और राधाकृष्णदास थे। सन् 1907 में यह मासिक पत्रिका हो गई और इसके सम्पादक श्यामसुंदर दास, रामचन्द्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा और वेणीप्रसाद बनाये गये। सन् 1920 में यह फिर त्रैमासिक हो गई। इसमें भाषा, साहित्य, अनुसंधान और समालोचना सम्बन्धी लेख रहते थे।)

(**सरस्वती**—सन् 1900 का वर्ष हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण है। सन् 1900 में प्रकाशित 'सरस्वती' पत्रिका अपने समय की युगान्तरकारी पत्रिका रही है। यह

अपनी छपाई, सफाई, कागज और चित्रों के कारण शीघ्र लोकप्रिय हो गयी। इसे बंगाली बाबू चिन्तामणि घोष ने प्रकाशित किया था तथा इसे नागरी प्रचारिणी सभा का अनुमोदन प्राप्त था। इसके सम्पादकमण्डल में बाबू राधाकृष्ण दास, बाबू श्यामसुन्दरदास, बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री, जगन्नाथदास रत्नाकर, किशोरीदास गोस्वामी थे। सन् 1903 में इसके सम्पादन का भार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पर पड़ा। इसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी रसिकों के मनोरंजन के साथ भाषा के सरस्वती भण्डार की अंगपुष्टि, वृद्धि और पूर्ति करना था। इसके पद्य, गद्य, काव्य, नाटक, उपन्यास, चंपू, इतिहास, जीवन-चरित्र, पत्र, हास-परिहास, कौतुक, पुरावृत, विज्ञान, शिल्पकला आदि सम्पादक के व्यक्तित्व की घोषणा करते हैं। इस पत्र में साहित्य, पुरातत्व, चरित्र चर्चा, विज्ञान, आलोचना, विवेचन और प्रकीर्ण शीर्षक होते थे। 'सरस्वती' के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए डॉ. हरप्रकाश गौड़ ने लिखा है–"सरस्वती का उद्देश्य हिन्दीभाषी क्षेत्र में सांस्कृतिक जागरण करना था, राष्ट्रीय जागरण तो उसका अंग था।"

सन् 1900 में सरस्वती के प्रकाशन से हिन्दी-पत्रकारिता जगत् में एक नई धारा का प्रवर्तन होता है। बाद में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। द्विवेदी ने अपने सम्पादन कौशल से साहित्य-जगत में एक नई क्रान्ति पैदा कर दी। सन् 1901 में कुल नौ मासिक पत्र निकले। सन् 1902 में चार साप्ताहिक और दो मासिक निकले। 'अनाथ रक्षक', 'वसुंधरा' नामक पत्र अजमेर तथा लखनऊ से प्रकाशित हुए। साप्ताहिक पत्रों में 'आर्यवनिता', 'गया समाचार' और 'दूध समाचार' क्रमशः जबलपुर, गया और मिर्जापुर से प्रकाशित हुए थे। सन् 1903 में छः साप्ताहिक, एक द्विमासिक तथा सात मासिक पत्रों का प्रकाशन हुआ। सन् 1904 में किसी नये पत्र का प्रकाशन नहीं हुआ। सन् 1905 में सात मासिक और एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ। साप्ताहिक पत्र का नाम 'स्वदेशबंधु' था। सन् 1906 में प्रकाशित पत्रों की संख्या उन्नीस थी। इन पत्रों में 'कान्यकुब्जबंधु', 'ब्राह्मण कुलचंद्रिका', 'कलवार गजट', 'वैदिक सर्वस्व' आदि प्रमुख थे।

सन् 1907 का वर्ष पत्रकारिता के नये और प्रगतिशील प्रयोग की दृष्टि से अत्युत्तम कहा जा सकता है। इस वर्ष 16 मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। साप्ताहिक पत्रों में 'अभ्युदय' और 'हिन्दी केसरी' के नाम उल्लेखनीय हैं।

अभ्युदय—सन् 1907 में उत्तर प्रदेश की राजनीति में जन-जागृति को जगाने वाले साप्ताहिक पत्र 'अभ्युदय' को महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय ने जन्म दिया। निर्भीकता, राष्ट्रप्रेम तथा समाज सुधार में अग्रणी यह पत्र 1918 ई. में दैनिक हो गया। सरदार भगतसिंह की फाँसी दिये जाने के बाद पत्र ने 'फाँसी-अंक' निकाल कर क्रान्ति मचा दी। कालाकाँकर से 'हिन्दोस्थान' पत्र छोड़ने के बाद हिन्दी पत्र 'अभ्युदय' में मदनमोहन मालवीय ने पहले पहल लिखा था। मालवीयजी सौम्य विचारों के समर्थक थे जिन्हें उन दिनों 'माडरेट' की संज्ञा दी गई थी।

हिन्दकेसरी—प्रसिद्ध नेता डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे ने 13 अप्रैल, 1907 में इसे नागपुर से निकाला था। इसमें लोकमान्य तिलक के प्रसिद्ध पत्र केसरी के लेखों का अनुवाद होता था। इसके सम्पादक पं. माधवराव सप्रे थे तथा सहायता के लिए पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल और पं. लक्ष्मीनारायण वाजपेयी थे। यद्यपि इसके लेख कम-से-कम एक सप्ताह पुराने होते थे, फिर भी हिन्दी प्रेमी इसे बड़े ही चाव से पढ़ते थे। यही नहीं, यह हिन्दी प्रान्तों में राजनीति की गीता के समान उत्सुकता तथा आदर से पढ़ा जाता था। इस पत्र ने विशेषत: उत्तर भारत के नवयुवकों में ओजस्वी देशभक्ति को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। कुछ दिनों में यह कई हजारों की संख्या में प्रकाशित होने लगा। उस समय गरम दल का यही प्रामाणिक पत्र था, परन्तु यह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सका, क्योंकि सरकार की दमन नीति के कारण 'भारतमाता' और 'कालापानी' इन दो सम्पादकीय टिप्पणियों के प्रकाशित होते ही 23 अगस्त, 1908 को इसके सम्पादक सप्रे को राजद्रोह के आरोप में पकड़ लिया गया, फलत: सन् 1909 में यह बन्द हो गया।

स्वराज्य—इलाहाबाद से सन् 1907 में सम्पादक शान्तिनारायण भटनागर के सम्पादन में 'स्वराज्य' साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ। आपत्तिजनक सामग्रियों के प्रकाशन के अपराध में इसके सम्पादक, सहायक सभी को न्यायालय द्वारा दण्डित किया गया। यह पत्र उग्र राष्ट्रीय विचारधारा का कितना बड़ा पोषक था, यह इससे पता चलता है कि रॉलेट कमीशन के सर रॉलेट, सर बासिल स्कॉट, सी. वी. कुमारस्वामी, बर्ने लोबेट तथा पी. सी. मित्तर ने इस पत्र का उल्लेख कमीशन की रिपोर्ट में किया। इस पत्र का मुँह तभी बन्द हुआ, जब सन् 1910 में भारतीय प्रेस अधिनियम लागू हुआ। इस पत्र में प्रकाशित सम्पादक के विज्ञापन की पंक्तियाँ आज तक अविस्मरणीय हैं—

> चाहिए 'स्वराज्य' के लिए एक सम्पादक!
> वेतन—दो सूखी रोटियाँ, एक गिलास ठण्डा पानी,
> और हर सम्पादकीय के लिए दस साल जेल।

नृसिंह—सन् 1907 में कलकत्ता से पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के सम्पादन में निकला पत्र 'नृसिंह' न्याय और औचित्य का रक्षक था। कांग्रेस के गरम दल को 'नृसिंह' राष्ट्रीय और नरम दल को 'धृतराष्ट्रीय' कहता था। नृसिंह का प्रकाशन एक वर्ष तक ही रहा। इसके प्रत्येक अंक में 40 पृष्ठ होते थे। प्रत्येक अंक में एक चित्र अवश्य रहता था। इस तरह इसमें लाला लाजपतराय, पं. ब्रह्मबान्धव उपाध्याय, डॉ. रासबिहारी घोष, बाल गंगाधर तिलक आदि के चित्र निकले थे।

प्रताप—सन् 1910 के साप्ताहिक पत्रों में 'प्रताप' प्रसिद्ध था। इसके सम्पादक बाबू गणेश शंकर विद्यार्थी थे। 'प्रताप' का ऑफिस क्रान्तिकारियों का जमघट था। थोड़े ही दिनों में इस पत्र का यश चारों ओर फैल गया। यह कानपुर से प्रकाशित होता था। निष्पक्ष समाचारों व टिप्पणियों के कारण इसको मुकदमें की धमकी भी दी गई, पर

'प्रताप' ने कभी भी समर्पण, निराशा, घिघियाना, झुकना, रुकना व बिकना तो सीखा ही नहीं था। यही कारण था कि उन पर मुकदमा चलाया गया, पर विद्यार्थी जी ने अपने संवाददाताओं ने नाम बताने से इंकार कर दिया और सहर्ष सजा पाकर पत्रकार परम्परा की नींव डाली।)

विश्वामित्र—कलकत्ता से बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल ने इसे सन् 1917 में प्रकाशित किया। यह पत्र वाणिज्यिक, सामाजिक और राजनीतिक पत्रकार कला का प्रवेश द्वार बना। विश्वामित्र हिन्दी का पहला दैनिक था जो एक साथ पाँच महानगरों से प्रकाशित होता था।

स्वदेश—स्वदेश का प्रकाशन गोरखपुर से सन् 1919 में पं. दशरथप्रसाद द्विवेदी ने किया जो गणेशंकर विद्यार्थी द्वारा प्रशिक्षित थे। इस पत्र का मूल सिद्धान्त था—

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

सम्पादक द्विवेदी जी के बाद इस पत्र का सम्पादन पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने किया। 'भावी क्रान्ति' विजय तथा विप्लव राग और माँ जैसे आलेखों के कारण स्वदेश स्वतन्त्रता की ज्वाला लोगों में धधकाता था।

(**कर्मवीर**—जबलपुर से सन् 1919 में श्री विद्यार्थी के अनन्य सहयोगी श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' पत्र निकाला। यह पत्र त्याग, तप, आहुति और क्रान्ति का उद्घोषक था। स्वतन्त्रता संग्राम में बारह बार जेलयात्रा और 63 बार तलाशियों के कारण चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व जुझारू बन गया था। उनके द्वारा लिखी निम्नलिखित पंक्तियाँ आज तक देशभक्तों के कर्ण-कुहरों में अनुगूँजित हैं—

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि सन् 1826 से उदंत मार्तण्ड के द्वारा हिन्दी पत्रकारिता की यात्रा आरम्भ हुई, वह अनेक विघ्न-बाधाओं तथा आर्थिक संघर्षों से जूझती हुई विकास के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर होती गयी।)